>

Title: Need to inculcate noble values in our children and appoint psychologists in each school.

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): आज बच्चों का छोटी-छोटी बातों पर हिंसक हो जाना साधारण बात है। बच्चों का चीजों को तोड़-फोड़ करना, गालियां देना, मारपीट करना रोज की घटना हो गई है। संयुक्त परिवार और दादी-नानी की कहानियों से बच्चों के मन में भाई-चारा, विनम्रता, बड़ों के प्रति आदर भाव जैसे सामाजिक मूल्य विकसित होते थे जिनसे एक हद तक बच्चे भोगवादी संस्कृति से बचे रहते थे। संयुक्त परिवारों के टूटने से बच्चों में अकेलापन, मानसिक तनाव तथा व्यक्तिगत पहचान खो जाने की व्याकुलता पनप नहीं है। वर्तमान समय में परिवारों में बच्चों से भावनात्मक रिश्ते समाप्त हो रहे हैं। यह निराशाजनक है कि बच्चों को अनेक प्रकार की भौतिकवादी सुविधाएं देकर माता-पिता यह समझते हैं कि हमने अपने कर्तव्यों को पूरा कर दिया। बच्चों के मनोभावों को समझने का प्रयास माता-पिता बिल्कुल नहीं करते हैं। बच्चा कंप्यूटर पर क्या कर रहा है, वह किस तरह के हिंसक खेलों को कंप्यूटर पर खेल रहा है यह जानने की फुरसत भी माता-पिता के पास नहीं है। कंप्यूटर पर हिंसक खेलों को खेलते-खेलते बच्चा वास्तविक जीवन में भी हिंसक हो जाता है।

परिवार, मित्र, परिवेश और शिक्षक बच्चों के व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होते हैं। इनमें कहीं भी चूक बच्चों को गलत राह पर ले जा सकती है। आज हर माता-पिता अपने बच्चों में एक सुपर बच्चे की तलाश कर रहे हैं। बढ़ते पढ़ाई के दबाव के कारण भी बच्चे हिंसक हो रहे हैं अथवा आत्महत्या की तरफ बढ़ रहे हैं।

शिक्षा-प्रणाली में मनोवैज्ञानिक प्रयोग की आवश्यकता है। प्रत्येक स्कूल में, प्रत्येक कक्षा के लिए अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो प्रत्येक बच्चे की समस्या को समझकर उसके अभिभावकों, साथियों और अध्यापकों के साथ मिलकर उसकी समस्या का समाधान कर सके। बच्चों को गुणात्मक शिक्षा देना अति आवश्यक है। भारत वर्ष में शिक्षा धर्म है, कर्तव्य है न कि मार्केटिंग स्टंट। बच्चों, अध्यापकों तथा माता-पिता के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का होना अति आवश्यक है। तभी बढ़ती हुई हिंसा को रोका जा सकता है।